Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

01

भविष्य में तैयार कौशल का विकास

डॉ. शान्ता चौहान
सहायक आचार्या
जय मीनेश आदिवासी विश्वविद्यालय, कोटा

सार –*आज के बदलते समय में जब रूनी वादी शिक्षा पद्धति अपना स्थान खोते जा रही है और जबकि शिक्षा क्षेत्र में तकनीकी का उपयोग बढ़ते जा रहा है आज जहाँ एक और विद्यार्थी ज्यादा कुशल बुद्धिमान वह तकनीकी प्रिय है, वहीं दूसरी ओर देखने को मिल रहा है कि इस रूढ़िवादी शिक्षा के कारण आज छोटे–छोटे बच्चे तनावग्रस्त हो रहे हैं तो यह आवश्यक हो जाता है कि हम इन विभिन्न प्रकार के भविष्य में तैयार कौशलों के माध्यम द्वारा बचपन से ही विद्यार्थियों को एक अच्छा जीवन जीने की विधाएं सिखाएं। संयुक्त राष्ट्र ने भी शिक्षा के क्षेत्र में कौशल को महत्व दिया है।*

प्रस्तावना –

भविष्य के लिए तैयार कौशल का विकास करने का मतलब है कि ऐसे कौशल हासिल करना जो बदलती दुनिया में काम करने में मदद करें। इन कौशलों को विकसित करके आप बाजार की मांगों को पूरा कर सकते हैं। भविष्य के लिए तैयार कौशल विकसित करने के लिए आपको सॉफ्ट और हार्ड दोनों तरह के कौशल सीखने होंगे। भविष्य में तैयार कौशल शिक्षा का मूल्य वर्धित कार्यक्रम है। भविष्य में तैयार कौशल योग्यताओं का एक संघ है। इसमें मूलभूत कौशल है स्वाद जागरूकता, परानुभूति, प्रभावी संप्रेषण, अंत व्यक्तिक संबंध, चुनौतियों का सामना करने की योग्यता, सृजनात्मक चिंतन, निर्णय लेना एवं समस्या समाधान इत्यादि। भविष्य में तैयार कौशल के द्वारा सभी विद्यार्थी दैनिक जीवन की माँगों और चुनौतियों का प्रभावी रूप से सामना कर सकते हैं। आज का आधुनिक युग कौशलों का युग है। कौशलों के बिना जीवनयापन संभव नहीं है। जीवनयापन करने के लिए भविष्य में तैयार कौशलों को विकसित करना होगा, क्योंकि बदलती दुनिया और आधुनिकीकरण का योग कौशलों पर ही निर्भर है। विद्यार्थी यदि इस आधुनिक युग के अनुसार अपने अंदर विभिन्न कौशलों को विकसित नहीं कर पाएगा तो वह पिछड़ेपन का शिकार होकर ही रह जाएगा और अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में असफल रहेगा। अतः विद्यार्थी के लिए भविष्य में तैयार कौशल का विकास अत्यधिक आवश्यक है। उसके लिए विद्यार्थी अपनी व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर अपनी योग्यता के अनुसार कौशलों को विकसित करें।

भविष्य के लिए तैयार कौशल के प्रकार –

1.	संचार	2.	समय प्रबंधन	3.	परिवर्तन प्रबंधन
4.	डेटा विश्लेषण	5.	कोडिंग	6.	ए आई
7.	महत्वपूर्ण सोच	8.	समस्या समाधान	9.	रचनात्मक
10.	भावनात्मकता बुद्धिमत्ता				

कौशल का सामान्य परिचय –

हम सब एक दूसरे से अलग होते हैं। अलग–अलग गुण एवं विशेषताओं के साथ जन्म लेते हैं। हम जीवन के विभिन्न प्रकार के गुण प्राप्त करने के मामले में भी भिन्न होते हैं। कुछ जन्मजात गुण एवं कुछ अर्जित गुण के साथ हम अपनी दक्षता बढ़ा सकते हैं। कौशल शब्द का मतलब है कि किसी निश्चित समय या ऊर्जा के अंदर अच्छे से काम करने की सीखी हुई क्षमता।

कौशल का तात्पर्य दक्षता से है। किसी भी कार्य आदि में निपुण होने की अवस्था ही कौशल है। रोजगार संबंधी कौशल को विकसित करने और जनता को रोजगार प्रदान करने को कौशल विकास कहते हैं। कौशल को विकसित करके गरीबी का उन्मूलन करने का लक्ष्य रखा गया है। यूं तो हम सभी भारतीय लोगों में स्वयं ही किसी न किसी कार्य को करने में दक्ष होते हैं, किंतु सरकारी प्रमाण पत्र न होने के कारण हमारी दक्षता का मूल्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में नहीं मापा जा सकता है।

इस परिस्थिति में ठोस परिवर्तन की आवश्यकता थी, जिसे कौशल विकास के द्वारा प्रशिक्षण देकर ही पूर्ण किया जा सकता है। बेरोजगारी से निपटने के लिए किसी क्षेत्र में दक्षता अर्थात कौशल प्रशिक्षण ही एक प्रमुख माध्यम है। जिससे प्रशिक्षित युवा स्वयं के विकास के साथ–साथ देश का भी विकास कर सकेगा।

उसकी कार्य कुशलता बढ़ेगी और स्वरोजगार हेतु प्रेरित होगा। जिससे बेरोजगारी की समस्या और गरीबी की समस्या का भी समाधान हो सकेगा क्योंकि किसी भी देश के आर्थिक विकास में बेरोजगारी और गरीबी दो प्रमुख समस्या ही बाधक होती है इसलिए इन समस्याओं का समाधान करना अति आवश्यक है।

योजनाओं के उचित कल्याण वन हेतु राष्ट्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता नीति 2015 को इस तरह संचालित किया गया जिस देश में कौशल प्रदान करने के लिए चल रही विभिन्न प्रकार की गतिविधियां इसके अंतर्गत आ

©Copyright 2025 *ADRJ*. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

जाएं एवं उन्हें उचित मानव को के अनुसार डाला जा सके। जिसके परिणाम स्वरुप अंतरराष्ट्रीय बाजार में इसके उपयोगिता एवं मांग बनी रहे।

बढ़ती आबादी और युवाओं में बेरोजगारी ने अवसाद को उत्पन्न किया है। इन अवस्थाओं ने लोगों को गरीबी रेखा से नीचे जीवन जीने पर मजबूर किया हुआ था। इस स्थिति से उबरने हेतु भारत सरकार द्वारा कौशल विकास योजना निर्मित की गई। जिसे 15 जुलाई 2015 को शुरू किया गया। इस विषय में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि ''ये सरकार गरीबी के खिलाफ एक जंग है और भारत का प्रत्येक गरीब और वंचित युवा इस जंग का सिपाही है।''

कौशल विकास योजना के प्रति जागरूक भारतीय सरकार बड़ी सजगता से इस कार्य को कर रही है। इसके संदर्भ में उन्होंने केंद्र व राज्य सरकारों के 11 मंत्रालय को सक्रिय बनाया है। जिसमें रक्षा, रेल, प्रवासी भारतीय, उद्योग, स्वास्थ्य, रसायन, उर्वरक, इस्पात, विद्युत, ऊर्जा, कोयला एवं सामाजिक न्याय को रखा गया है।

कौशल पर आधारित शिक्षा – कौशल पर आधारित शिक्षा छात्रों को व्यावहारिक रूप में समर्थ बनाती है। कौशल पर आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को वास्तविक दुनिया के किसी भी कोने में समस्याओं को हल करने और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करती है।

उद्देश्य –

1. भविष्य में तैयार कौशल के द्वारा विद्यार्थियों को अपनी इच्छित योग्यता के क्षेत्र में महारत प्राप्त करने में मदद मिलती है।
2. भविष्य में तैयार कौशल विद्यार्थियों को व्यवहारिक क्षमताओं और समाज के विभिन्न दृष्टिकोण में समर्थ बनाते हैं।
3. भविष्य में तैयार कौशल विद्यार्थियों में उद्योग प्रासंगिक कौशल का निर्माण करने में मदद करती है।
4. भविष्य में तैयार कौशल के द्वारा विद्यार्थियों को बाजार की जरूरत के मुताबिक तैयार करती है।
5. भविष्य में तैयार कौशलों के द्वारा विद्यार्थियों को अपने करियर में सफल होने के लिए जरूरी कौशल सीखाती है।
6. कौशल आधारित शिक्षा उद्यमशीलता की भावना को घोषित करती है और नवाचार को बढ़ावा देती है।

भविष्य में तैयार कौशल और विद्यार्थी के बीच संबंध –

भविष्य में तैयार कौशल और विद्यार्थियों के बीच अत्यंत घनिष्ठ संबंध होता है। भविष्य में तैयार कौशल से विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वह नई तकनीकी और बदलते क्षेत्र से जुड़ने में सक्षम होते हैं और भविष्य में तैयार कौशल के विकास से विद्यार्थियों को नई कठिनाइयों का सकारात्मक दृष्टिकोण से सामना करने में मदद मिलती है।

1. कौशलों के द्वारा सभी विद्यार्थी विभिन्न उद्योगों और व्यावसायिक जरूरत को पूरा करने में सक्षम बनते हैं।
2. कौशल के द्वारा विद्यार्थियों को बदलती मांगो और बाजारों की स्थिति के साथ चलने में समर्थ बनाती है।
3. विद्यार्थी कौशल के विकास के द्वारा किसी भी समस्या का समाधान आसानी से कर सकते हैं चाहे वह समस्या सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक किसी भी क्षेत्र की क्यों ना हो।
4. कौशल विकास के द्वारा विद्यार्थी शिक्षा प्रणाली को अगले 20–30 वर्षों की जरूरत के हिसाब से डिजाइन कर सकता है।
5. कौशल विकास के द्वारा विद्यार्थी स्वयं उत्पादक बन सकता है तथा वह दूसरों को भी रोजगार उपलब्ध करा सकता है।
6. भविष्य में तैयार कौशल विकास के द्वारा विद्यार्थी शिक्षक शिक्षा को भी एक नए सिरे से तैयार करें जो भविष्य की मांगों को पूरा कर सके।

कौशल पर आधारित भारत सरकार के द्वारा चलाई जाने वाली विभिन्न योजनाएं –

1. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना
2. प्रवासी कौशल विकास योजना
3. राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन
4. फसल ऋण योजना
5. स्किल इंडिया
6. कौशल भारत अभियान

इन योजनाओं के द्वारा देश के विद्यार्थियों को कौशल सीखने के साथ–साथ सशक्त बनाया जाता है।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना –

इस योजना की शुरुआत भारत सरकार ने 16 जुलाई 2015 में की थी। इस योजना के द्वारा करोड़ों युवाओं को

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

लाभ मिला है। इस योजना के तहत् 2020 तक एक करोड़ युवाओं को ट्रेनिंग देने की योजना थी। इस योजना का मुख्य उद्देश्य कम पढ़े लिखे और बीच में पढ़ाई छोड़ चुके युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराना है। इस योजना के तहत 3 महीने, 6 महीने और 1 साल तक के कोर्स उपलब्ध थे। जिसमें युवाओं को रजिस्ट्रेशन करा कर वह कोर्स पूरा कराकर उन्हें सर्टिफिकेट दिया जाता है। यह सर्टिफिकेट पूरे भारत में वेध होता है। इस योजना के द्वारा देश के सभी युवा वर्गों को संगठित करके उनके कौशल और योग्यता को बढ़ाकर उनकी रुचि अनुसार रोजगार उपलब्ध कराना है। इस योजना के पहले वर्ष में 24 लाख युवाओं को शामिल किया गया यह योजना पूर्ण रूप से निःशुल्क है।

प्रवासी कौशल विकास योजना –

भारत विदेश मंत्रालय द्वारा शुरू की गई एक कौशल विकास योजना है। जिसका प्रमुख उद्देश्य संभावित प्रवासी श्रमिकों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप कौशल देना है, जिससे वह विदेश में रोजगार के अवसरों के लिए तैयार हो पाए।

इस योजना के बारे में 7 से 9 जनवरी 2017 तक बेंगलुरु में आयोजित 14वें प्रवासी भारतीय दिवस में युवाओं को विदेशों में रोजगार उपलब्ध कराने के लिए कौशल प्रदान करने के बारे में एक महत्वपूर्ण घोषणा की गई। हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि प्रवासी कौशल विकास योजना विदेश में नौकरी की तलाश कर रहे भारतीय युवाओं को प्रशिक्षित करने के लिए यह एक विशेष कार्यक्रम होगा। यह उन युवाओं को उपयुक्त कौशल सेट में प्रशिक्षण देगा जो संचार व्यापार विशिष्ट ज्ञान और कौशल के साथ–साथ सांस्कृतिक अभिविन्यास की आवश्यकताओं को पूरा करेगा।

लघु अवधि कार्यक्रम वह है जो युवाओं को विभिन्न देशों में चुनौती पूर्ण कार्यभार करने आत्मविश्वास को बढ़ाने और अंतरराष्ट्रीय कौशल की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संपूर्ण रूप से तैयार करेगा।

राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन –

इस योजना को 01/07/2015 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था और 15/7/2015 को विश्व युवा कौशल दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा आधिकारिक रूप से लॉन्च किया गया था। राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन को कौशल प्रशिक्षण गतिविधियों के संदर्भ में विभिन्न क्षेत्रों और राज्यों में अभिसरण बनाने के लिए इस मिशन को विकसित किया गया है तथा इसके अलावा कुशल भारत के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन ने केवल कौशल प्रयासों को समेकित और समन्वित करेगा बल्कि गति और लक्षण के साथ बड़े स्तर पर कौशल प्राप्त करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में निर्णय लेने में भी तेजी लाएगा।

कौशल ऋण योजना –

कौशल ऋण योजना जुलाई 2015 में शुरू हुई थी जिसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय मानव को और योग्यता से जुड़े कौशल विकास पाठ्यक्रमों के लिए युवाओं को संस्थागत ऋण उपलब्ध कराना था, जिससे राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढांचे के अनुसार प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा प्रमाण पत्र प्राप्त किया जा सके। यह योजना भारतीय बैंक संघ के सभी बैंक को और आरबीआई द्वारा सलाह दिए गए किसी भी अन्य बैंक एवं वित्तीय संस्थानों पर लागू होती है। इस योजना के तहत इस योजना के संचालन के लिए सभी बैंकों को व्यापक दिशा निर्देश दिए गए हैं।

स्किल इंडिया –

स्किल इंडिया योजना देश के युवाओं को कौशल प्रशिक्षण देने की एक योजना है, जिसका मुख्य उद्देश्य देश में जो भी प्रतिभाएं हैं उनको विकसित कर आगे बढ़ने के अवसर देना है। यह योजना राष्ट्रीय कौशल विकास निगम की मदद से क्रियान्वित है।

स्किल इंडिया योजना के लाभ –

1. इस योजना से देश के युवाओं को मार्केटिंग कौशल का प्रशिक्षण प्राप्त होता है।
2. इस योजना से अविक्षित क्षेत्र में आगे बढ़ाने के अवसर मिलते हैं।
3. योजना से देश के बेरोजगार युवाओं को रोजगार मिलने में मदद प्राप्त होती है।
4. इस योजना से देश के युवाओं को उद्यमिता के क्षेत्र में विकसित होने में मदद मिलती है।
5. इस योजना से देश के युवाओं का आत्मविश्वास बढ़ाने और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में मदद मिलती है।

स्किल इंडिया योजना के तहत प्रशिक्षण केन्द्रों में अल्प समय प्रशिक्षण दिया जाता है। इस अल्प समय प्रशिक्षण में सॉफ्ट स्किल उद्यमिता, वित्तीय और डिजिटल साक्षरता जैसे कार्यक्रम शामिल है। इस योजना की शुरुआत 15 जुलाई 2015 को हुई थी। इस योजना की शुरुआत भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दृष्टि से शुरू किया गया था। स्किल इंडिया योजना के तहत 18 अलग–अलग कोर्स क्रियान्वित है, जिसमें उद्योग मित्र से लेकर फाइनेंस तक

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

के कोर्स उपलब्ध हैं। स्किल इंडिया योजना के तहत प्रत्येक वर्ष 24 लाख युवाओं को लाभान्वित किया जा रहा है। इस योजना के तहत 10वीं 12वीं पास या बीच में पढ़ाई छोड़ने वाले युवाओं को उद्योग से संबंधित कौशल का प्रशिक्षण दिया जाता है तथा प्रशिक्षण पूर्ण होने पर युवाओं को प्रमाण पत्र दिया जाता है।

स्किल इंडिया के कोर्स –

1. फैशन डिजाइनिंग
2. मैनेजमेंट डेवलपमेंट प्रोग्राम
3. बढ़ईगिरी, इलेक्ट्रोप्लेटिंग
4. डेरी आधारित ईएसडीपी
5. प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम
6. एंटरप्रेन्योरशिप कम स्किल डेवलपमेंट (ESDP)
7. हीट ट्रीटमेंट, CAD / CAM, कैटरिंग
8. बेकरी प्रोडक्ट, एसी रेफ्रिजरेटर और वाटर कूलर रिपेयरिंग
9. माइक्रो प्रोफेसर एप्लीकेशन और प्रोग्रामिंग

कौशल भारत अभियान –

कौशल भारत अभियान का मुख्य उद्देश्य युवाओं को कौशल में सशक्त बनाना और उन्हें रोजगार योग्य बनाना है और तथा डिजिटल साक्षरता को बढ़ाना भी इसका मुख्य उद्देश्य है।

कौशल भारत अभियान की कुछ प्रमुख जानकारी –

1. कौशल भारत अभियान के तहत युवाओं को रोजगार पाने के लिए ऋण की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।
2. इस अभियान के तहत गैर साक्षर और ग्रामीण जनता को भी विभिन्न कौशलों में प्रशिक्षण दिया जाता है।
3. कौशल भारत अभियान के तहत पारंपरिक कारीगरों को उनके कौशल का नवीनीकरण करके वैश्विक बाजारों से जोड़ना ।
4. इस अभियान के तहत देश के युवाओं को डिजिटल कौशल और प्रौद्योगिकी से जुड़े कौशलों में प्रशिक्षण दिए जाते हैं।

भविष्य के लिए तैयार कौशल की आवश्यकता एवं महत्व –

भविष्य के लिए तैयार कौशल संकल्पना से तात्पर्य बड़े पैमाने पर रोजगार संबंधी कौशल को विकसित करना और युवाओं को रोजगार प्राप्त करने में मदद करना और राष्ट्र निर्माण के लिए उनको प्रोत्साहित करना। भविष्य के लिए तैयार कौशल की संकल्पना को साकार करने हेतु अब हमें आत्मनिर्भर देश की आवश्यकता है। यदि अब भी हम आत्मनिर्भर अथवा स्वावलंबी ना बन पाए तो पुनः गुलाम बन जाएंगे। अतः हमें अपने राष्ट्र को विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में स्थापित करने हेतु बहुत जरूरी है कि हम हर क्षेत्र में कौशल युक्त हो।

माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने भी इस योजना का शुभारंभ करते हुए कहा था कि हम नहीं चाहते कि हर कोई पढ़ने के बाद नौकरी की खोज करे। हम चाहते हैं कि वह कौशल सीखें और स्वयं का विकास करें जिससे वह अन्य को प्रेरित कर सकें।

आज भारतीय अर्थव्यवस्था में देश के युवाओं में अवसाद हीनता की भावना व्याप्त होती जा रही है, जिसका प्रमुख कारण और सुरक्षा की भावना भी है, जिसे उनका विश्वास जीतकर ही संभाल जा सकता है। विश्वास उनके अवसर का, विश्वास उनके प्रोत्साहन का, विश्वास उनको आत्मनिर्भर बनाने का, विश्वास उनको संरक्षित करके आगे बढ़ने का, इस परिप्रेक्ष्य में प्रशिक्षित होने से हमारे देश के युवाओं को आर्थिक मजबूती तो मिलेगी साथ ही उनमें आत्मविश्वास में वृद्धि भी होगी।

सुझाव –

1. प्रशिक्षार्थी के स्तर को ज्ञात करने के लिए उसे घरेलू टेस्ट का प्रावधान उत्पन्न करना चाहिए, जिससे युवा इस परीक्षा प्रशिक्षण को गंभीरता से लेने लगेगा।
2. कौशल विकास में उन्नति लाने के लिए जरूरी है कि जैसे शिक्षा के क्षेत्र को महत्व दिया गया है, जागरूकता फैलाई गई है, वैसे ही कौशल विकास को भी बढ़ावा दिया जाए।
3. प्रशिक्षण केन्द्रों को संचालित करने के लिए जो धनराशि दी जाती है, वह तीन व चार भागों में दी जाती है, जिसे केंद्र संचालक उदासीन हो जाता है, उत्साह में कमी होने से प्रशिक्षणार्थियों मैं उत्साह का संचार कैसे होगा, अतः इस और ध्यान देने की आवश्यकता है।
4. कौशल विकास के लिए अलग से केंद्र खोलने की आवश्यकता क्यों है, इसे तो विद्यालयों अथवा महाविद्यालयों में ही सम्मिलित कर दिया जाए, जिस पर कोई शुल्क नहीं लगेगा और 12वीं पास करके

वह कॉलेज में प्रशिक्षण को ग्रहण करने आ सकते हैं।

5. प्रायः युवा प्रशिक्षण लेते हैं और जॉब पर नहीं जाते, तो इस हेतु उन में प्रशिक्षण देने के पहले ही एफिडेविट भरवा के रखना चाहिए कि वह जॉब पर जाने से मन नहीं कर सकते। यदि जाना नहीं चाहते तो प्रशिक्षण में प्रयुक्त धन, समय क्षति के लिए सरकार को कुछ धनराशि दंड के रूप में दें।
6. कौशल केन्द्रो द्वारा प्रदान की गई शिक्षा में खर्च के स्तर में वृद्धि करनी चाहिए। जिससे कौशल प्रशिक्षण केंद्र अच्छा परिणाम दे सकें। इसके लिए युवाओं के अंदर रुझान उत्पन्न कर उन्हें प्रेरित करने वाली कक्षाएं भी चलाई जानी चाहिए।
7. ग्रामीण क्षेत्र में प्रशिक्षण के टारगेट को बढ़ावा दिया जाए, जिससे ज्यादा युवा प्रशिक्षित हो सके। उन्हें देखकर और भी युवा आकर्षित होंगे।
8. महिलाओं के लिए उनकी सुविधा अनुसार सही समय में प्रशिक्षण की कक्षा संचालित करने का प्रयास किया जाए।
9. यदि बच्चों की योग्यता में वृद्धि पाई जाए तो उन्हें क्लास में सम्मानित कर उत्साहित किया जा सकता है।
10. प्रशिक्षण को हर विद्यालय और महाविद्यालय में अनिवार्य कर दिया जाए और महिलाओं को इस हेतु आकर्षित करने के लिए विभिन्न स्थानों पर जागरूकता कैंप लगाए जाएं जिसमें कौशल प्रशिक्षण के लाभों को विस्तृत रूप में विश्लेषित किया जाए।
11. शासन को समय–समय पर शिक्षण विभाग और उद्योग विभाग द्वारा भी प्रशिक्षण संस्थानों का मूल्यांकन करना चाहिए जिसके लिए बेहतर प्रदर्शन पर उन्हें और उनके कर्मचारियों को नगद पुरस्कार दिया जाना चाहिए।
12. पिछले क्षेत्र जो अब कौशल के रूप में विकसित हो चुके हैं से भी अन्य क्षेत्रों व केन्द्रों को सीख लेनी चाहिए ताकि इस पथ पर चल के यह क्षेत्र भी अपने युवाओं को प्रशिक्षित कर सकें।
13. प्रशिक्षणथी के स्तर को ज्ञात करने के लिए उसे घरेलू टेस्ट का प्रावधान उत्पन्न करना चाहिए, जिससे युवा इस प्रशिक्षण को गंभीरता से लेने लगेगा।

सभी बिंदुओं को यदि लागू कर दिया जाए तो कौशल विकास केन्द्रों की स्थिति बेहतर हो जाएगी। हमारा मुख्य उद्देश्य हमारे देश में व्याप्त बेरोजगारी को दूर करना है और महिलाओं को भी कुशल निपुण बनाकर आगे लाना है, जिससे कौशल विकास के तहत पूर्ण किया जा सकता है। कौशल केंद्रो में जो काउंसलर नियुक्त किया जाता है उसे माता–पिता को समझाने और युवाओं को भी समझने का प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ –

1. विनोद कुमार कोमा, कौशल भारतः एक अध्ययन
2. ओम प्रकाश कश्यप एडम स्मिथः आधुनिक अर्थशास्त्र का निर्माता 200
3. अखरमाला एडम स्मिथ : आधुनिक अर्थशास्त्र का निर्माण 2015
4. www-mudra-org-in
5. Annual report PMMY 2021
6. ए. के. कनौजिया कौशल भारत मिशन आवश्यकता एवं महत्व।
7. डॉ. अर्चना गौर, 21 सी सदी में प्रौद्योगिकी विकास।